कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ......हिन्दी......

परीक्षा का दिन..............

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

परीक्षक के हस्ताक्षर ...... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 159/2016

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, कैलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1. (क)	शीर्षक – "स्वावलम्बन" या "जीवन की प्रगति – स्वावलम्बन"
(ख)	जब व्यक्ति के मन में कार्य करने का उत्साह तथा अपने ऊपर विश्वास नहीं हो, आलस्य ने उसकी शक्ति को पंगु बना दिया हो तब वह स्वयं को किसी कार्य को करने में असमर्थ पाएगा और समाज पर भार बन जाएगा।
(ग)	समाज की प्रगति स्वावलम्बन, कर्मठता, स्वयं कार्य कर जीने की भावना तथा आलस्य का त्याग आदि बातों पर निर्भर करती है।
(घ)	महापुरुषों ने स्वावलंबन की पूजा करके अपने हाथों से अपने महान जीवन का द्वार खोला था। उन्हें स्वावलंबन का अमृत पीकर परावलम्बन, अकर्मण्यता, आलस्य का त्याग करके अपने जीवन को सफल बनाया है।
(2)	
(क)	शीर्षक– "पथ भूल न जाना पथिक कहीं"
(ख)	युद्ध की रणभेरी सुनकर सैनिक अपने परिवार वालों एवं साथियों को विदा कहकर पुलक या प्रसन्न होते हुए युद्ध में जाने के लिए तैयार होते हैं।
(ग)	पंक्ति का आशय है कि युद्ध में जाते समय सैनिक कर्तव्य और प्रेम की उलझन में अर्थात् देश के प्रति अपने कर्तव्य और परिजनों की प्रेम की उलझन अर्थात् दुविधा में फँस जाता है उसे इनमें उलझकर पथ नहीं भूलना चाहिए

प्राप्तांक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(घ) जब स्वदेश बलिदान माँग रहा हो तो हमारा कर्तव्य है कि हमें अपने देश की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अपना मस्तक अपने हाथों से स्वयं बलिदान के लिए बढ़ाना चाहिए। हमें तनिक भी असमंजस में न पड़कर स्वतंत्रता की ज्वाला में कूद जाना चाहिए।

5. (क) वाक्य में 'सकर्मक क्रिया' है।
परिभाषा:-
जब वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के पूर्ण भाव को प्रकट करने के लिए कर्म की आवश्यकता हो अर्थात् जब क्रिया के साथ कर्म प्रयुक्त किया गया हो वहाँ सकर्मक क्रिया होती है।

(ख) महात्मा गाँधी :- व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक
बोलते थे :- भूतकालिक क्रिया, 'महात्मा गाँधी' कर्ता की क्रिया, सकर्मक क्रिया, विधानवाचक क्रिया

(ग) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं-
(i) साधारण वाक्य:-
वह वाक्य जिसमें एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय हो उसे साधारण वाक्य कहते हैं।
जैसे- महात्मा गाँधी सदा सत्य बोलते थे।
(ii) मिश्र वाक्य :-
ऐसा वाक्य जिसमें एक प्रधान उपवाक्य तथा एक आश्रित वाक्य हो उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।
जैसे- महात्मा गाँधीजी ने कहा कि सदा सत्य बोलो।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
(iii)	संयुक्त वाक्य:- ऐसा वाक्य, जिसमें दो साधारण वाक्य या दो स्वतंत्र वाक्य किसी संयोजक वाल्यय से जुड़े हो, संयुक्त वाक्य कहलाता है। जैसे- राम खेलता है और श्याम पढ़ता है।
(घ) (i)	नौ दो ग्यारह होना - भाग जाना वाक्य प्रयोग:- पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गया।
(ii)	काला अक्षर भैंस बराबर - अनपढ़ वाक्य प्रयोग:- आज भारत के अधिकांश पिछड़े गाँवों में अधिकतर लोग काला अक्षर भैंस बराबर है।
(ङ)	पंक्ति में 'स' वर्ण की आवृति से अनुप्रास अलंकार है। परिभाषा:- जहाँ एक ही वर्ण की आवृति दो या दो से अधिक बार हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सेवा में,
~~श्रीमान नगर निगम कार्यकारी अधिकारी~~
~~नगर निगम~~

(क) माँ को धन्य कहा गया है क्योंकि उसने कवि को दंतुरित मुस्कान वाले बच्चे से मिलवाया तथा उसने उस बच्चे को जन्म देकर उसे वात्सल्य भरा प्रेम दिया।

(ख) पंक्ति का भाव यह है कि जब कवि तथा दंतुरित मुस्कान धारी बच्चे की आँखें चार हो जाती हैं अर्थात् जब दोनों एक दूसरे को देखते हैं तब उनका प्रेम और भी बढ़ जाता है और कवि को बच्चे की मुस्कान और भी छविमान लगती है।

7.
(क) कृष्ण ने मथुरा जाने के बाद उद्धव के माध्यम से गोपियों के पास योग संदेश भेजा है। उसके प्रति गोपियों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की कि कृष्ण प्रेम से अलग करने वाला यह योग उनके लिए कड़वी ककड़ी के समान है जिसे उन्होंने न तो आज तक भुगता है न ही उसके बारे में कभी सुना है। यह तो उनके लिए एक व्याधि के समान है।

(ख) कवि गिरिजा कुमार माथुर ने 'छाया मत छूना' कविता के माध्यम से यह संदेश दिया है कि हमें अपने विगत जीवन की छायाओं अर्थात् मधुर स्मृतियों को याद नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे सुख प्राप्ति

की बजाय दुःख वृद्धि होती है। हमें जीवन के कठोर यथार्थ का सामना कर वर्तमान व भविष्य को सुदृढ़ बनाना चाहिए।

(घ) राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में व्यक्ति अर्थात् मनुष्य को विनम्रता, त्याग, विनय-शीलता तथा बड़ों के प्रति आदर आदि जीवन मूल्यों को अपनाने का संकेत दिया है। यदि मनुष्य के चरित्र में क्रोध के साथ-साथ विनम्रता का भाव हो तो वह श्रेष्ठ है। इसमें बड़बोलेपन तथा आत्मप्रशंसा को त्यागने के लिए कहा है।

Q8
(क) रेखांकित पंक्ति का भाव यह है कि राधा की सुन्दरता इतनी शोभायमान है कि चन्द्रमा (चाँद) भी उनके मुख की सुन्दरता के सामने प्रतिबिंब अर्थात् छाया लगता है। अर्थात् चन्द्रमा को उनके मुख की परछाई माना गया है।

(ख) 'दूध को सो फेन' से कवि का आशय है कि सुन्दर चाँदनी की स्वच्छता या उज्ज्वलता इतनी अधिक है कि वह आकाश रूपी आँगन में दूध के फेन या झाग के समान प्रतीत होती है।

(ग) सुंदर चाँदनी के कारण आकाश का स्वरूप स्फटिक शिलाओं से बने सुधा मंदिर के समान दिखाई दे रहा है जिसमें कोई दीवार नहीं है।

(घ) 'आरसी से अम्बर में आभा सी उजारी लगै' में राधाजी के लिए प्रयुक्त हुआ है क्योंकि वह अम्बर के समान दर्पण में आभा के समान लग रही है।

प्राप्तांक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9.
(क) हालदार साहब के दुखी होने का कारण यह था कि कैप्टन की मृत्यु हो चुकी थी तथा अब सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा।
वे इस बात से भी दुखी थे कि देश के लिए अपनी घर-गृहस्थी-जवानी सब होम करने वालों पर भी लोग हँसते हैं।

(ख) हालदार साहब सुभाष की बिना चश्मे की मूर्ति नहीं देखना चाहते थे अतः हालदार साहब कस्बे में नहीं ~~रुकना~~ रुकना चाहते थे।

10.
(ख) फादर बुल्के को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग कहा गया है क्योंकि उन्हे भारतीय न, होते हुए भी भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया। उन्होंने भारतीय संस्कृति को अपनाया। उन्होंने 'रामकथा: उद्भव और विकास' तथा 'बाइबल व ब्लु बर्ड' का हिन्दी अनुवाद लिखा। उन्होंने भारतीय पर्वों, त्योहारों में भाग लिया तथा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर बल दिया।

(क) बालगोबिन भगत सामाजिक रुढ़ियों की अवहेलना करते थे। उन्होंने अपने पुत्र की मृत्यु पर शोक की बजाय आनन्द मनाया तथा उसके शव को अग्नि भी अपनी पतोहू से दिलाई जबकि यह काम पुरुषों द्वारा किया जाता है। उन्होंने अपनी पुत्रवधु को पुनर्विवाह की आज्ञा भी दी।

(ग) यह सत्य है कि दकियानूसी विचारधारा जहाँ मानव मन को हतोत्साहित करती है वहीं प्रगतिशील विचारधारा मानव मन को हतोत्साहित करती है। जहाँ लेखिका 'मन्नु भंडारी' के पिता को उनके पड़ोसी मित्र ने आकर लेखिका के आंदोलन करने के विरुद्ध भड़काया वहीं उनके डॉ॰ मित्र ने उसकी प्रशंसा करके लेखिका के पिता के मन को गर्व से भर दिया।

11· (ख) नियमित और सच्चे मन से की गई प्रार्थना अवश्य फलदायी होती है। बिस्मिल्ला खाँ रोज खुदा से सच्चा स्वर प्रदान करने तथा उनकी वाणी में सुर पैदा करने की याचना करते थे। इससे न केवल वे सच्चे सुर साधक बने बल्कि उन्हे 'भारत रत्न' से भी सम्मानित किया गया।

(क) नेताजी का चश्मा' पाठ में बताया गया है कि देशभक्त होने के लिए सेनानी या सिपाही होने की आवश्यकता नहीं है इसके लिए तो छोटी-छोटी बाते ही पर्याप्त है। अपने देश के विकास में बूढ़े, बच्चे, महिलाएं सब योगदान दे सकते है। जैसे - 'कैप्टन चश्मे वाला'

12· हिरोशिमा में परमाणु - विस्फोट के बाद लेखक वहाँ की स्थिति का जायजा लेने के लिए वहाँ गया। उसने चिकित्सा-लयो में जाकर अणु विस्फोट से पीड़ित व्यक्तियों को देखा परन्तु उसके मन में कोई अनुभूति नहीं हुई।

जब एक बार लेखक जापान में सड़क के किनारे घूम रहा था तब उसने एक चट्टान पर मानव की उजली छाया देखी इसके उसे परमाणु विस्फोट की तीव्रता का अनुभूति एवं अनुभव दोनो हुई। उसकी भीतरी विवशता प्रबल हो गई और उसने 'हिरोशिमा' नामक कविता लिखी।

परीक्षार्थी उत्तर

4. सेवा में,
कार्यकारी अधिकारी महोदय,
नगर निगम,
भरतपुर।

विषय - सड़क पर बढ़ते अतिक्रमण को नियंत्रित करने हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि हमारे क्षेत्र में लगातार सड़क अतिक्रमण बढ़ता जा रहा है। दुकानदार, फेरीवाले और स्थानीय निवासी भी सड़क पर अतिक्रमण कर रहे हैं जिससे सड़कों पर जगह की कमी हो रही है और बड़े वाहनों का निकलना कठिन होता जा रहा है।

फेरीवाले धीरे-धीरे सड़क पर अतिक्रमण करके दुकान बना लेते हैं। कई बार स्थानीय निवासियों में भी हिंसक झड़पें हुई हैं। सड़क पर असुविधा का माहौल बढ़ता जा रहा है।

अतः आपसे निवेदन है कि कृपया इस मुद्दे पर ध्यान दें और शीघ्रातिशीघ्र इसके निवारणार्थ उपाय करें।

धन्यवाद।

दिनांक - 12 मार्च 2016

प्रार्थी
अविनाश
निवासी- भरतपुर

परीक्षार्थी उत्तर

13.
(क) 'जार्ज पंचम की नाक' व्यंग्यात्मक कहानी में भारत सरकार की गुलाम मानसिकता पर व्यंग्य किया है। स्वतंत्रता के बाद भी, सरकार ब्रिटिश सरकार के क्रूर अधिकारी जार्ज पंचम की नाक को अपना सम्मान समझ रहे थे। ब्रिटेन की महारानी के आगमन की तैयारी की जा रही थी। इस कहानी में भारत सरकार की गुलाम मानसिकता के साथ-साथ उसकी कार्यशैली पर भी व्यंग्य किया है।

(ग) टुन्नू के मरे जाने पर कभी-भी न पसीजने वाले हृदय वाली दुलारी की आँखों से आँसु आ गए थे। उसके मन में टुन्नू के लिए अलग ही स्थान था। वह जानती थी कि टुन्नू उसके शरीर से नहीं बल्कि उसकी कला से प्रेम करता था। उनका प्रेम आत्मिक था। अतः कठोर हृदया समझी जाने वाली दुलारी की आँखों से भी आँसु आ गए। उसका हृदय कातर हो उठा।

(घ) साना-साना हाथ जोड़ि ... पाठ में माया का अर्थ है- 'यह संसार' तथा छाया का अर्थ है -'सौन्दर्य' इस प्रकार छाया और माया का खेल 'इस संसार के सौंदर्य' को कहा गया है। लेखिका ने यहाँ हिमालय की पहाड़ियों और प्रकृति के सौंदर्य के लिए यह प्रयुक्त किया है।

परीक्षार्थी उत्तर

14(क) दुपहिया वाहन चलाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(i) हेलमेट अवश्य पहनना चाहिए।

(ii) वाहन को निर्धारित गति से चलाना चाहिए।

(iii) आवश्यक कागजात व PUC. (प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र) अवश्य होना चाहिए।

(iv) वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात नहीं करनी चाहिए।

(v) दुपहिया लेन में वाहन चलाना चाहिए।

(ख) एक अच्छे नागरिक होने के नाते दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की हम निम्न प्रकार से मदद कर सकते हैं-

(i) व्यक्ति को निकट स्थित अस्पताल में ले जाना चाहिए।

(ii) उसके परिजनों को सूचित करना चाहिए।

(iii) प्राथमिक उपचार से उसकी मदद करनी चाहिए।

(iv) पुलिस को सूचित करना चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	3.	राजस्थान में गहराता जल संकट

संकेत बिंदु :-

(i) जल का महत्त्व
(ii) जलाभाव का परिणाम
(iii) जल की उपलब्धता
(iv) भावी जल संकट
(v) उपसंहार

(i) जल का महत्त्व :-

"पंचभौतिक तत्वों में (वायु, पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश) पृथ्वी के बाद जल का महत्त्व सर्वाधिक माना गया है। जलाभाव के कारण मंगल आदि ग्रहों पर जीवन संभव नहीं है।

जल के बिना जीवन की कल्पना ही असंभव है। प्रकृति ने इस जीवनदायक तत्व को अन्य तत्वों की भाँति बड़ी उदारता से प्रदान किया है परन्तु मानव ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए 'प्रकृति के इस वरदान' को भी दुर्लभ एवं दूषित बना दिया है। इसके महत्त्व को निम्न पंक्तियों से समझा जा सकता है।

"जल का दूजा नाम जीवन,
जल नहीं तो नहीं है जीवन।
जल से ही है संभव जीवन,
है इससे अपने अस्तित्व में,
नर - पशु - पक्षी - वन।"

धरती के कई भू-भागों पर जलाभाव के कारण लगातार रेगिस्तान का प्रसार हो रहा है। जल की कमी के कारण पेड़-पौधों तथा प्राणियों का जीवन कठिन होता जा रहा है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

राजस्थान में भी जल का नितांत अभाव है। अवर्षण की स्थिति में तो जलसंकट और अधिक गहरा हो जाता है। किसी शायर ने कहा है–

"चाँदनी चाँद से होती है, सितारों से नहीं।
प्यास जल से बुझती है, अंगारों से नहीं।"

(iii) जलाभाव का परिणाम:–

राजस्थान में एक तो पहले से ही जल की कमी है फिर उत्तरोत्तर बढ़ती आबादी के कारण जल संकट गहराता जा रहा है। अवर्षण होने की स्थिति में यह स्थिति और भी भयावह रूप धारण कर लेती है।

जलाभाव के कारण प्राणियों का जीवन संकट में रहता है। ग्रीष्म ऋतु में जल संकट की व्यापकता बढ़ जाती है। निर्जलीकरण के कारण हजारों लोग मर जाते हैं। राजस्थान के सम्पूर्ण भू-भाग पर अकाल का संकट गहराता रहता है।

पश्चिमोत्तर राजस्थान की स्थिति:–

पश्चिमोत्तर राजस्थान की भूमि तो एकदम निर्जल है हालांकि श्रीगंगानगर जिले से इंदिरा गाँधी नहर के माध्यम से जल पहुँचाया जा रहा है परन्तु उसकी स्थिति भी असंतोषप्रद है। किसी कवि ने राजस्थान में जल संकट की स्थिति को देखकर कहा है–

"लुप्त हो गई सरस्वती मैया
नाराज तुमसे यमुना मैया
पहुँच न सके गंगा मैया
जल संकट आया राजस्थान मैया।"

परीक्षार्थी उत्तर

जल की उपलब्धता के बिना मानव जीवन की कल्पना भी असंभव है। रहिमन जी ने कहा –

"रहिमन पानी रखिये बिन पानी सब सून
पानी गये न उबरे मोती मानस चून।।"

(iii) जल की उपलब्धता :–

जल की अधिकता – 'बाढ़' तथा कमी – 'अकाल' का कारण बनती हैं अतः हमें जल तथा प्रकृति के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए।

उत्तर-पूर्वी भाग में जल की उपलब्धता :–

उत्तर-पूर्वी भाग में हरियाणा से नहरों द्वारा जल पहुँचाया जा रहा है। परन्तु इससे जलापूर्ति नहीं हो पा रही है। यह तो 'ऊँट के मुँह में जीरे' के समान है।

"जाकर देखो शहरों में,
सूखा पानी नहरों में।
उद्योगों से निकला कचरा
पानी बदले जहरों में।"

दक्षिण-पूर्वी भाग में जल की उपलब्धता :–

राजस्थान में अब कोई भी नदी प्रवाहित नहीं होती जो राजस्थान में जलापूर्ति कर सके। प्राचीन काल में 'घग्घर (सरस्वती)' नदी प्रवाहित होती थी जो अब भारती के गर्भ में विलुप्त हो चुकी है। 'माही तथा चम्बल' नदी भी केवल दक्षिण-पूर्वी भाग को ही हरा भरा रख सकती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

किसी कवि ने राजनेताओं पर व्यंग्य कसते हुए कहा है कि-

"कहते हैं राजनेता पानी बचाओ, बचाओ पानी
उनके घर पर जाकर देखो निखरा कैसे पानी?
स्वीमिंग पूल में पानी, पानी रसोई में, बाग में पानी,
झंडे लेकर खड़े होने से नहीं बचना है पानी।
अंत में बचाओ पानी, बचाओ पानी, बचाओ पानी।"

(iv) भावी जल संकट:-

राजस्थान में जल संकट की स्थिति नियंत्रित होने की बजाय 'काले कोहरे' की भाँति राजस्थान के जीवन को आगोश में लेती जा रही है।

जल संकट के कारण राजस्थान में प्रतिवर्ष अकाल पड़ता है। यह स्थिति नियंत्रित होने की बजाय भयावह रूप धारण करती जा रही है।

जलाभाव 'सुरसा के मुख' की भाँति प्रतिवर्ष राजस्थान को अपने मुख में लेने को तत्पर रहता है।

प्राचीन संस्कृति की अवहेलना:-

प्राचीन काल में समय पर वर्षा चाहने हेतु वर्षा के देवता 'इन्द्र' तथा 'जल देव वरुण' का पूजन किया जाता था परन्तु वर्तमान में इनकी अवहेलना की जा रही है।

नदियों को 'माँ' के समान माना जाता था उन्हें 'माँ' का दर्जा देकर उनकी सुरक्षा का ध्यान रखा जाता था। 'सरस्वती, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र' आदि नदियों का स्तवन किया जाता था। फलस्वरूप जल संकट नहीं था परन्तु वर्तमान में इनकी अवहेलना ने जल संकट को बल प्रदान किया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

राजस्थान की जनसंख्या तीव्रता से बढ़ रही है। औद्योगिकीकरण ने भी गति पकड़ ली है। खनिज सम्पदा का दोहन किया जा रहा है।

"पाताल-तोड़ कुएँ", बावड़ियाँ, तालाब, नदियाँ आदि सूख रहे हैं। वर्षा की अनिश्चितता बढ़ती जा रही है।

राजस्थान में जल संकट कम होने के कोई आसार नहीं दिख रहे हैं परन्तु फिर भी जल संकट से बचा जा सकता है। इसके लिए निम्न उपाय अपनाए जाने चाहिए-

(1) जनसंख्या, शहरीकरण, औद्योगीकीकरण पर नियंत्रण
(2) खनिज सम्पदा के दोहन पर नियंत्रण
(3) एनीकट, बाँधों का निर्माण
(4) वर्षा जल का संग्रहण
(5) जल के अतिदोहन पर नियंत्रण

"एक तो जनसंख्या की मार,
ऊपर से उद्योगों की रफ्तार।
जल संकट कैसे कम हो?
जब एक अनार सौ बीमार"

(v) उपसंहार :-

राजस्थान में जल संकट से बचा सकता है सरकार एवं समाज-सेवियों को पंजाब-हरियाणा-गुजरात आदि राज्यों से जल लाने का प्रयास करना चाहिए। 'अमृतं जलं' जैसे कार्यक्रम चलाने चाहिए।

जन-जागरण भी राजस्थान में जलाभाव कम करने का प्रभावी उपाय है। हमें जल के महत्त्व को समझते हुए उसे बचाने का प्रयास करना चाहिए।

"शहरीकरण, औद्योगीकरण, कर रहे गंगा मैया को गंदा
स्वार्थी ~~मानव~~ लाखों का जीवन लेकर चलाए अपना धंधा।"

किसी शायर ने कहा है-
"कब समझेगा मानव जल नहीं है, उसकी
एक बूँद यानि एक व्यक्ति की ~~Life~~ Wife"

"जल ही जीवन का आधार है।"

सरकार द्वारा जनहित में जारी है-
"पानी बचाओ, बिजली बचाओ, सबको पढ़ाओ"

"अगर अपनी प्रगति को बचाना है तो जल को बचाना होगा
विलासिताओं का जीवन छोड़कर जल बचाना होगा।"

-x- समाप्त -x-